Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP-45*

पवित्र उपवन एवं स्वदेशी प्रथाएँ : पर्यावरण संरक्षण में भारतीय ज्ञान परंपरा का योगदान

डॉ शैलजा .साबले, सहायक प्राध्यापक, मराठी विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

सारांश)Abstract) भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को पूजनीय एवं जीवन का आधार माना गया है। पर्यावरण संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग हेतु भारतीय समाज ने अनेक सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सामाजिक परंपराओं का विकास किया, जिनमें पवित्र उपवन) Sacred Groves) **तथा स्वदेशी प्रथाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पवित्र उपवन ऐसे वन क्षेत्र हैं, जिन्हें स्थानीय समुदाय धार्मिक, सांस्कृतिक अथवा आध्यात्मिक मान्यताओं के आधार पर संरक्षित रखते हैं। इसी प्रकार स्वदेशी प्रथाएँ प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग एवं संरक्षण का मार्ग प्रशस्त करती हैं।**

वर्तमान समय में बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण, जैव विविधता के ह्रास तथा जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में इन पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। प्रस्तुत शोधपत्र में पवित्र उपवनों एवं स्वदेशी - प्रथाओं के पर्यावरणीय महत्व, पर्यावरण संरक्षण में उनकी भूमिका तथा समकालीन संदर्भ में उनकी उपयोगिता का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित ये पारंपरिक संरक्षण प्रणालियाँ आधुनिक पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान एवं सतत विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रभावी योगदान दे सकती हैं।

मुख्य शब्द)Keywords): पवित्र उपवन, स्वदेशी प्रथाएँ, भारतीय ज्ञान परंपरा, पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, सतत विकास।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥
(श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 9, श्लोक 26)

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

भारतीय संस्कृति वैदिक काल से ही अपनी पूजापद्धतियों के माध्यम से पर्यावरण के प्रति श्रद्धा, सम्मान एवं संरक्षण का संदेश देती आई है। भगवान को भक्तिभाव से पत्र (पत्ते), पुष्प, फल तथा जल अर्पित करने की परंपरा केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के प्रति कृतज्ञता एवं पर्यावरणीय चेतना का भी परिचायक है। जिन प्राकृतिक तत्त्वों ने मानव जीवन को संभव बनाया है, उनके प्रति केवल सम्मान ही नहीं, अपितु श्रद्धापूर्वक उनका पूजन करने की परंपरा भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान है।

भारतीय परंपरा में समुद्र, नदियों, सरोवरों तथा अन्य जलस्रोतों का पूजन किया जाता है तथा जल को तीर्थस्वरूप माना गया है। जीवन का आधार प्रदान करने वाली पवित्र धरती की चरणरज को मस्तक पर धारण करने की परंपरा प्रकृति के प्रति विनम्रता एवं कृतज्ञता का प्रतीक है। इसी मिट्टी से देवताओं की प्रतिमाओं का-निर्मित देवी पूजन किया जाता है तथा उन्हें जल अर्पित किया जाता है, जो प्रकृति और आध्यात्मिकता के अभिन्न संबंध को दर्शाता है।

भारतीय धार्मिक परंपराओं में विभिन्न देवीदेवताओं को विशिष्ट वनस्पतियाँ एवं पुष्प अर्पित करने की परंपरा भी पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भगवान गणेश को दूर्वा तथा जास्वंद (गुड़हल) के पुष्प, भगवान शिव को बेलपत्र, माता लक्ष्मी को गेंदा (झेंडू) के पुष्प तथा भगवान श्रीकृष्ण को तुलसी अर्पित की जाती है। इन परंपराओं का मूल उद्देश्य समाज में ऐसे पौधों के रोपण, संरक्षण एवं संवर्धन को प्रोत्साहित करना है, जिससे जैव विविधता का संरक्षण हो तथा प्राकृतिक संतुलन बना रहे।

इसी प्रकार भारतीय संस्कृति में समय-समय पर पशु पक्षियों का सम्मान एवं पूजन भी किया जाता है। जीवनदायिनी प्राणवायु (ऑक्सीजन) प्रदान करने वाले वृक्षों को घरआँगन-, मंदिरों तथा सार्वजनिक स्थलों पर लगाने और उनकी रक्षा करने की परंपरा पर्यावरणीय संरक्षण की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है।

जलवायु कार्रवाई)Climate Action)

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में "जलवायु कार्रवाई)Climate Action)" का उद्देश्य पृथ्वी के बिगड़ते पर्यावरणीय संतुलन एवं जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करना है। इसके अंतर्गत कार्बन उत्सर्जन में कमी लाना, अक्षय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देना, प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित करना तथा हरित अर्थव्यवस्था)Green

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

Economy) को प्रोत्साहित करना प्रमुख लक्ष्य हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित पर्यावरणीय मूल्य एवं प्रकृतिपूजन की परंपराएँ इन वैश्विक उद्देश्यों की प्राप्ति में आज भी अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रेरणादायी सिद्ध होती हैं।

1. प्रस्तावना: भारतीय संस्कृति में मानव और प्रकृति का संबंध अत्यंत घनिष्ठ, आध्यात्मिक एवं सहअस्तित्व पर आधारित रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकृति को केवल संसाधन के रूप में नहीं, बल्कि जीवनदायिनी शक्ति के रूप में स्वीकार करती है। वेद, उपनिषद, पुराण तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को पंचमहाभूत के रूप में वर्णित किया गया है तथा इनके संरक्षण, संवर्धन एवं संतुलित उपयोग पर विशेष बल दिया गया है।

इसी सांस्कृतिक दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में पवित्र उपवनों)Sacred Groves) तथा विभिन्न स्वदेशी पर्यावरणीय प्रथाओं का विकास हुआ। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पवित्र उपवन अलगअलग नामों से जाने जाते हैं-; जैसे राजस्थान में "ओरण", महाराष्ट्र में "देवराई", हिमाचल प्रदेश में "देववन" तथा मेघालय में "लॉ क्यंतांग)Law Kyntang)"। ये उपवन स्थानीय समुदायों द्वारा संरक्षित प्राकृतिक विरासत के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जहाँ धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक परंपरा तथा पारिस्थितिक संरक्षण का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

संत साहित्य का उद्भव भी प्रकृति की गोद में हुआ है। जगद्गुरु संत तुकाराम ने भंडारा पर्वत पर अपने अभंगों की रचना की, जबकि समर्थ रामदास स्वामी ने शिवथरघळ में *दासबोध* की रचना की। इसी प्रकार संत ज्ञानेश्वर की आध्यात्मिक चेतना का संबंध अजानवृक्ष के समीप स्थित साधनास्थल से माना जाता है। ये उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि भारतीय संत परंपरा में प्रकृति केवल साधना का स्थान नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभूति का आधार भी रही है।

जगद्गुरु संत तुकाराम ने वृक्षों और लताओं को अपना सगा संबंधी माना।- उन्होंने प्रकृति के प्रत्येक तत्त्व के प्रति आत्मीयता, करुणा एवं संरक्षण की भावना का संदेश दिया। मानव जीवन के लिए जीवनदायी वृक्षों के संरक्षण, संवर्धन एवं पालनपोषण को सामाजिक और धार्मिक आस्था से जोड़कर भारतीय संस्कृति ने प्रकृतित पूजन की समृद्ध परंपरा विकसि-की। मनुष्य के प्रथम श्वास से लेकर जीवनपर्यंत पर्यावरण के प्रति सम्मान, कृतज्ञता और संरक्षण का संदेश देने वाला

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

भारत विश्व की प्राचीनतम पर्यावरण-संवेदनशील सभ्यताओं में से एक है।

वर्तमान समय में पर्यावरण की परिभाषा हमारे चारों ओर विद्यमान प्राकृतिक एवं मानवीय परिस्थितियों के समग्र स्वरूप से की जाती है। इसमें पृथ्वी पर विद्यमान सभी सजीव तत्त्व—जैसे मनुष्य, पशुपक्षी - एवं वनस्पतियाँ—तथा निर्जीव तत्त्व—जैसे वायु, जल, भूमि, सूर्य का प्रकाश एवं अन्य प्राकृतिक घटक—शामिल हैं। मानव जीवन तथा समस्त जैव जगत का अस्तित्व इन सभी तत्त्वों के संतुलित एवं स्वस्थ पर्यावरण पर निर्भर करता है। इस दृष्टि से भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित पर्यावरणीय मूल्य आज के वैश्विक पर्यावरणीय संकट के समाधान हेतु अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रेरणास्पद सिद्ध होते हैं।

संत तुकाराम का पर्यावरणसंदेश-

वृक्षवल्ली आम्हां सोयरी वनचरे।
पक्षीही सुस्वरे आळविती।।
— संत तुकाराम

हिंदी रूपांतरण :

"वृक्ष और लताएँ हमारे सगेसंबंधी हैं-, वन में रहने वाले सभी जीव हमारे अपने हैं। पक्षी भी मधुर स्वरों में गान करते हैं।"
— संत तुकाराम महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध) (संत

यह अभंग भारतीय संत परंपरा की पर्यावरणीय चेतना का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें संत तुकाराम ने प्रकृति के प्रत्येक घटक—वृक्ष, लताएँ, वन्य जीव तथा पक्षियों—को मानव परिवार का अभिन्न अंग माना है। यह दृष्टिकोण मानव और प्रकृति के मध्य सहअस्तित्व, आत्मीयता तथा संरक्षण की भावना को सुदृढ़ करता है।

2. पवित्र उपवन की अवधारणा

पवित्र उपवन)Sacred Groves) ऐसे प्राकृतिक वन क्षेत्र हैं, जिन्हें किसी देवी-देवता, संत, पूर्वज अथवा धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं से जोड़कर संरक्षित किया जाता है। इन क्षेत्रों में वृक्षों की कटाई, शिकार तथा प्राकृतिक संसाधनों के अन्य प्रकार के दोहन पर सामाजिक एवं धार्मिक प्रतिबंध लगाए जाते हैं। इस प्रकार स्थानीय समुदाय अपनी आस्था एवं परंपराओं के माध्यम से इन उपवनों का संरक्षण सुनिश्चित करते हैं।

पवित्र उपवन केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे पारंपरिक पर्यावरण संरक्षण प्रणाली के उत्कृष्ट उदाहरण भी हैं। सदियों से ये उपवन जैव विविधता के संरक्षण, जल स्रोतों की सुरक्षा, मृदा संरक्षण तथा पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आए हैं। वर्तमान

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

समय में, जब प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता दबाव और पर्यावरणीय संकट वैश्विक चिंता का विषय हैं, तब पवित्र उपवनों की संरक्षणपरंपरा सतत विकास की दिशा में - एक प्रेरणादायी मॉडल प्रस्तुत करती है।

3. पवित्र उपवनों का पर्यावरणीय महत्व

3.1 जैव विविधता का संरक्षण

पवित्र उपवन अनेक दुर्लभ, स्थानिक)Endemic) तथा विलुप्तप्राय वनस्पतियों एवं जीवजंतुओं के प्राकृतिक आवास हैं। - इन क्षेत्रों में मानवीय हस्तक्षेप अत्यंत सीमित होने के कारण प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र सुरक्षित रहता है तथा विभिन्न प्रजातियोंको संरक्षण प्राप्त होता है। इस प्रकार ये उपवन जैव विविधता के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

3.2 जल संरक्षण

अनेक पवित्र उपवन प्राकृतिक जलस्रोतों, झरनों तथा जलग्रहण क्षेत्रों के समीप स्थित होते हैं। यहाँ विद्यमान सघन वृक्षावरण वर्षा जल के संचयन, भूजल पुनर्भरण तथा जल प्रवाह के संतुलन में सहायक होता है। परिणामस्वरूप स्थानीय जल संसाधनों की गुणवत्ता एवं उपलब्धता बनी रहती है।

3.3 मृदा संरक्षण

घने वनस्पति आवरण के कारण मिट्टी का कटाव कम होता है तथा भूमि की उर्वरता बनी रहती है। वृक्षों की गहरी एवं विस्तृत जड़ें मिट्टी को मजबूती प्रदान करती हैं, जिससे भूस्खलन, भूमि अपरदन तथा अन्य भूक्षरण संबंधी समस्याओं में कमी आती - है। इस प्रकार पवित्र उपवन प्राकृतिक मृदा संरक्षण के प्रभावी साधन हैं।

3.4 जलवायु संतुलन

पवित्र उपवन वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण कर ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त ये स्थानीय तापमान को नियंत्रित करने, आर्द्रता बनाए रखने तथा सूक्ष्म जलवायु)Microclimate) को संतुलित रखने में भी सहायक होते हैं। इस प्रकार पवित्र उपवन जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने तथा पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

4. स्वदेशी प्रथाएँ और पर्यावरण संरक्षण

स्वदेशी प्रथाएँ)Indigenous Practices) स्थानीय समुदायों द्वारा विकसित वे पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ हैं, जो प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए प्राकृतिक संसाधनों के सतत एवं संतुलित

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

उपयोग को प्रोत्साहित करती हैं। ये प्रथाएँ पीढ़ीपीढ़ी अनुभव-दर-, लोकज्ञान तथा सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर विकसित हुई हैं और पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुई हैं।

4.1 पारंपरिक जल प्रबंधन

भारत में तालाब, बावड़ी, कुएँ तथा वर्षा जल संचयन की परंपराएँ जल संरक्षण के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन पारंपरिक प्रणालियों ने विशेष रूप से शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने, भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देने तथा जल संसाधनों के सतत उपयोग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज भी इन प्रणालियों का पुनर्जीवन जल संकट के समाधान में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

4.2 जैविक कृषि

भारतीय कृषि परंपरा में गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट तथा प्राकृतिक कीटनाशकों का व्यापक उपयोग किया जाता था। इन विधियों से मिट्टी की उर्वरता एवं जैविक गुणवत्ता बनी रहती थी, रासायनिक प्रदूषण में कमी आती थी तथा कृषि उत्पादन पर्यावरणअनुकूल बना रहता था। वर्तमान - समय में जैविक खेती को सतत कृषि विकास का प्रभावी विकल्प माना जा रहा है।

4.3 वृक्षपूजा की परंपरा-

भारतीय संस्कृति में पीपल, बरगद, नीम, तुलसी, आम तथा आँवला जैसे वृक्षों को धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व प्रदान किया गया है। इन वृक्षों के प्रति श्रद्धा एवं पूजा की परंपरा ने उनके संरक्षण को सामाजिक व्यवहार का अभिन्न अंग बना दिया। परिणामस्वरूप इन उपयोगी एवं पर्यावरणीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वृक्षों का संरक्षण स्वतः सुनिश्चित होता रहा।

4.4 सामुदायिक संसाधन प्रबंधन

भारतीय ग्रामीण समाज में जंगलों, चरागाहों, जलस्रोतों तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों का सामुदायिक स्तर पर संरक्षण एवं प्रबंधन किया जाता था। सामूहिक उत्तरदायित्व की इस व्यवस्था ने संसाधनों के संतुलित उपयोग, संरक्षण तथा पुनर्भरण को सुनिश्चित किया तथा स्थानीय स्तर पर पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. पूजनीय वृक्षों का संरक्षण एवं पर्यावरणीय महत्व

भारतीय ज्ञान परंपरा में वृक्षों को जीवनदाता, देवतुल्य तथा पर्यावरणीय संतुलन के आधारस्तंभ के रूप में माना गया है। वृक्षों के प्रति श्रद्धा एवं धार्मिक आस्था ने उनके संरक्षण की ऐसी सामाजिक व्यवस्था विकसित की, जो

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

आधुनिक पर्यावरण संरक्षण की अवधारणाओं के साथ पूर्णतः सामंजस्य स्थापित करती है। पूजनीय वृक्ष न केवल सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि जैव विविधता, जलवायु संतुलन तथा मानव स्वास्थ्य के संरक्षण में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

5.1 तुलसी (*Ocimum sanctum*)

तुलसी को भारतीय संस्कृति में देवी स्वरूप माना गया है। यह वायु को शुद्ध करने, रोगाणुनाशक गुणों तथा औषधीय उपयोगिता के लिए प्रसिद्ध है। प्रत्येक घर में तुलसी रोपण की परंपरा इसके संरक्षण का प्रभावी माध्यम रही है। तुलसी का पौधा पर्यावरण शुद्धि के साथसाथ - आयुर्वेदिक चिकित्सा में भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

5.2 पीपल (*Ficus religiosa*)

पीपल भारतीय संस्कृति का अत्यंत पूजनीय वृक्ष है। यह अनेक पक्षियों, कीटों तथा अन्य जीवों को आश्रय प्रदान करता है और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी विस्तृत जड़ प्रणाली मिट्टी के संरक्षण में सहायक होती है तथा यह वायु गुणवत्ता में सुधार एवं पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी योगदान देता है।

5.3 बरगद (*Ficus benghalensis*)

बरगद दीर्घायु, स्थिरता एवं समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। अपनी विशाल छाया तथा विस्तृत जड़ प्रणाली के कारण यह एक समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र का निर्माण करता है। अनेक पक्षियों, जीवजंतुओं एवं - सूक्ष्म जीवों के लिए यह सुरक्षित आवास उपलब्ध कराता है तथा जैव विविधता के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

5.4 आम (*Mangifera indica*)

आम भारतीय संस्कृति, धार्मिक अनुष्ठानों एवं लोकजीवन का अभिन्न अंग है। इसके पत्तों एवं फलों का उपयोग विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक अवसरों पर किया जाता है। आम के वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड के अवशोषण, छाया प्रदान करने, मृदा संरक्षण तथा जैव विविधता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

5.5 आँवला (*Phyllanthus emblica*)

आँवला आयुर्वेद में अत्यंत महत्त्वपूर्ण औषधीय वृक्ष माना जाता है। यह विटामिनसमृद्ध स्रोत है तथा मानव सी का- स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। इसके अतिरिक्त आँवला पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने, मृदा संरक्षण तथा हरित आवरण में वृद्धि करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए भारतीय परंपरा में इसे धार्मिक, औषधीय

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

एवं पर्यावरणीय—तीनों दृष्टियों से अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया गया है।

6. वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में तीव्र गति से बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण, वनों की कटाई तथा पर्यावरण प्रदूषण के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर अभूतपूर्व दबाव उत्पन्न हुआ है। ऐसी परिस्थितियों में पवित्र उपवन एवं स्वदेशी प्रथाएँ पर्यावरण संरक्षण के प्रभावी, सहभागी एवं सतत मॉडल प्रस्तुत करती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित ये संरक्षण प्रणालियाँ आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु प्रेरणास्रोत सिद्ध हो सकती हैं।

इनके माध्यम से निम्नलिखित लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं—

- जैव विविधता का संरक्षण।
- जल संसाधनों का सतत एवं संतुलित प्रबंधन।
- स्थानीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता को बढ़ावा।
- जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों में कमी।
- सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals–SDGs) की प्राप्ति में सहयोग।
- पारंपरिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं संवर्धन।

7. चुनौतियाँ

यद्यपि पवित्र उपवन एवं स्वदेशी प्रथाएँ पर्यावरण संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, तथापि वर्तमान समय में इनके समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं—

- शहरीकरण एवं औद्योगीकरण का बढ़ता प्रभाव।
- पारंपरिक ज्ञान एवं लोकपरंपराओं का धीरे-धीरे लुप्त होना।
- नई पीढ़ी में पर्यावरणीय जागरूकता एवं सहभागिता का अभाव।
- भूमि उपयोग के स्वरूप में तीव्र परिवर्तन।
- पर्याप्त कानूनी संरक्षण एवं संस्थागत समर्थन का अभाव।
- सांस्कृतिक एवं पारंपरिक मूल्यों का क्षरण।

इन चुनौतियों के कारण पवित्र उपवनों एवं स्वदेशी संरक्षण प्रणालियों का अस्तित्व निरंतर प्रभावित हो रहा है। अतः इनके संरक्षण हेतु सामाजिक जागरूकता, प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप तथा स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है।

8. निष्कर्ष

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति के प्रति श्रद्धा, संवेदनशीलता एवं संरक्षण की भावना पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने की एक प्रभावी सामाजिक व्यवस्था रही है। पवित्र उपवन तथा स्वदेशी प्रथाएँ केवल धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि जैव विविधता संरक्षण, जल प्रबंधन, मृदा संरक्षण तथा जलवायु संतुलन के सशक्त साधन भी हैं। भारतीय समाज ने धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से प्रकृति के संरक्षण का जो मॉडल विकसित किया, वह आज भी सतत विकास की अवधारणा के अनुरूप है।

पर्यावरण के संत प्रकृति संरक्षण की : भारतीय संत परंपरा

महाराष्ट्र सहित भारत की संत परंपरा में पर्यावरण संरक्षण का विशेष स्थान रहा है। संत साहित्य के माध्यम से वृक्षों, पशु-पक्षियों, नदियों एवं समस्त प्रकृति को अपना आत्मीय मानकर उनके संरक्षण का संदेश दिया गया है। इन संतों ने प्रकृति और मानव के मध्य सहअस्तित्व, करुणा तथा उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ किया।

संत तुकाराम महाराज

संत तुकाराम ने प्रकृति के साथ अत्यंत आत्मीय एवं पारिवारिक संबंध स्थापित किया। उनके प्रसिद्ध अभंग—

"वृक्षवल्ली आम्हां सोयरी वनचरे।
पक्षीही सुस्वरे आळविती।।"

का आशय है कि वृक्ष, लताएँ, वन्य जीव तथा पक्षी हमारे अपने परिवार के सदस्य हैं। इस प्रकार उन्होंने प्रकृति संरक्षण को मानव जीवन का नैतिक एवं आध्यात्मिक दायित्व माना।

संत ज्ञानेश्वर महाराज

संत ज्ञानेश्वर द्वारा रचित *ज्ञानेश्वरी* में प्रकृति के प्रति गहन संवेदनशीलता एवं पर्यावरणीय चेतना का दर्शन होता है। उन्होंने मानव को प्रकृति के साथ सामंजस्य, सहअस्तित्व एवं सौहार्दपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा दी।

समर्थ रामदास स्वामी

समर्थ रामदास स्वामी ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ *दासबोध* में वृक्षों, उद्यानों तथा वनों के संरक्षण के महत्व का विस्तृत वर्णन किया है। उन्होंने समाज को वृक्षारोपण, वन संरक्षण एवं प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग का संदेश दिया।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

संत गाडगे महाराज

संत गाडगे महाराज ने सामाजिक सुधार के साथसाथ पर्यावरणीय स्वच्छता-, विशेषकर ग्राम स्वच्छता, को जनआंदोलन का स्वरूप-प्रदान किया। उनका संदेश "स्वच्छता ही सेवा है" आज भी पर्यावरण संरक्षण एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है।

तुलसी, पीपल, बरगद, आम तथा आँवला जैसे पूजनीय वृक्षों के प्रति समाज में विकसित श्रद्धा एवं संरक्षण की भावना पर्यावरणीय स्थिरता और जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान पर्यावरणीय संकटों के समाधान हेतु आवश्यक है कि इन पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का संरक्षण, पुनर्जीवन एवं व्यापक प्रसार किया जाए तथा आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ उनका समन्वय स्थापित किया जाए। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित पर्यावरणीय मूल्यों को व्यवहार में अपनाकर सतत विकास, पारिस्थितिक संतुलन तथा मानव कल्याण के लक्ष्यों की प्रभावी रूप से प्राप्ति की जा सकती है।

संदर्भसूची (References)

1. प्राचीनमराठीवाङ्मयाचाइतिहासडॉ.ल. रा. नसीराबादकर.
2. महाराष्ट्रसंस्कृतीपु. ग.सहस्त्रबुद्धे
3. अथर्ववेद।पृथ्वीसूक्त।चौखंबासंस्कृतसीरीज, वाराणसी।
4. ऋग्वेदशोध।
5. विभिन्नसूक्तएवंपर्यावरणीयसंदर्भ।
6. Gadgil, M., & Vartak, V.D. (1976). Sacred Groves of India: A Plea for Continued Conservation. Journal of the Bombay Natural History Society.
7. Malhotra, K.C. (2011). Cultural and Ecological Dimensions of Sacred Groves in India. Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya, Bhopal.
8. UNESCO. Indigenous Knowledge and Biodiversity Conservation Reports. Paris: UNESCO Publications.
9. Singh, J.S. (2018). Traditional Ecological Knowledge and Environmental Conservation. Springer Nature.
10. Forest Survey of India (FSI). India State of Forest Report. Dehradun.
11. पर्यावरण, वनएवंजलवायुपरिवर्तनमंत्रालय, भारतसरकार।विभिन्नवार्षिकप्रतिवेदन।
12. शर्मा, आर. (2019). भारतीयज्ञानपरंपराऔरपर्यावरणसंरक्षण. नईदिल्ली: भारतीयज्ञानप्रणालीप्रकाशन।
13. पाण्डेय, के. (2020). सततविकासएवंभारतीयसांस्कृतिकपरंपराएँ . वाराणसी: भारतीयविद्यासंस्थान।
14. UNESCO (2017). Local and Indigenous Knowledge Systems for Biodiversity Conservation. Paris.
15. Tiwari, B.K., Barik, S.K. & Tripathi, R.S. (1998). Sacred Groves of Meghalaya: Ecological Significance and Conservation Perspectives. Current Science, 75(4), 273–278.

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026